दृष्टिबाधितों के लिए डॉ. गद्रे ने तैयार किए विशेष उपकरण

विज्ञान के प्रयोग के लिए नहीं होंगी आंखों की जरूरत

पत्रिका plus रिपोर्टर

इंदौर. लैबोरेटरी में किए जाने वाले किसी भी प्रयोग के लिए सही फॉर्मूले के साथ सटिक मापन भी जरूरी है। यही वजह है कि आंखें मूंदकर प्रयोग नहीं किए जाते। दृष्टिबाधितों के लिए किसी लैब में प्रयोग करना सपने की ही तरह है, लेकिन अब वे न सिर्फ प्रयोग कर सकेंगे, बल्कि इसके नतीजे भी जान सकेंगे।

जी हां, दृष्टिबाधितों को लैब में प्रयोग करने में सक्षम बनाने के विशेष उपकरण तैयार किए गए हैं। इन उपकरणों को बनाने वाले डॉ. धनंजय गद्रे दिल्ली की नेताजी सुभाषचंद्र बोस यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स फॉर एंबेडेड प्रोजेक्ट डिजाइन के निदेशक हैं। वे आईईटी की कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लेने इंदौर आए हैं। डॉ. गद्रे ने बताया, ये उपकरण स्पीकर से लैस हैं, ताकि इस्तेमाल के दौरान सही वजन, माप और पहचान हो सके। संस्थान ने 14 से अधिक ऐसे उपकरण विकसित किए हैं, जिनका उपयोग भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के प्रयोगशाला में होने वाले कई तरह के प्रयोगों के लिए किया जा सकता है। इन्हें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में इंजीनियरिंग व प्रौद्योगिकी संस्थान के विद्यार्थियों को प्रदर्शित किया गया था। रसायन और जीव विज्ञान लैब में प्रयोग के

दौरान उनके उत्पाद के रंग के बारे में जानना महत्वपूर्ण है। संस्थान ने एक ऐसा उपकरण विकसित किया है, जो लिटमस पेपर के रंगों की पहचान कर सकता है। डॉ. गद्रे ने बताया, एक लिटमस पेपर को उपकरण में स्थापित करने की आवश्यकता है, जहां यह लिटमस के रंग को पहचानने की क्षमता रखता है।

इनोवेशन एंड चैलेंजेस इन इंजीनियरिंग पर कॉन्फ्रेंस

देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के आईईटी (इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी) में शुक्रवार से इनोवेशन एंड चैलेंजेस इन इंजीनियरिंग साइंसेज विषय पर दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस की शुरुआत हुई। उद्घाटन समारोह यूनिवर्सिटी के ऑडिटोरियम में हुआ, जिसमें पूर्व आउटस्टैंडिंग साइंटिस्ट एवं डायरेक्टर टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट एंड सपोर्ट ग्रुप डॉ. अनिल रावत, प्रोफेसर नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी दिल्ली के डॉ. धनंजय गदरे, कार्यवाहक कुलपति डॉ. सुमंत कटियाल, डीन इंजीनियरिंग डॉ.प्रतोष बंसल, आईईटी डायरेक्टर डॉ. संजीव टोकेकर, कॉन्फ्रेंस समन्वयक डॉ.नागेंद्र सोहनी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि डॉ. रावत ने इनोवेट टू सरमाउंट चैलेंज विषय पर कीनोट लैक्चर दिया ,जिसमें उन्होंने रोजाना आने वाली समस्याओं, चुनौतियों और उनके प्रौद्योगिकीय निराकरण के बारे में विचार साझा किए। विशेष वक्ता डॉ. गदरे ने लीफ नोड्स डिजाइन गाइडलाइंस फॉर आइओटी विषय पर उनके शोध के बारे में बताते हुए माइक्रोकंट्रोलर बोर्ड का प्रदर्शन किया। संचालन डॉ. रक्षा उपाध्याय ने किया। आभार डॉ. प्रज्ञा शुक्ला ने माना।